Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

भारतीय संगीत में नवीन बदलाव

DR. SHRUTI HORA
Associate Professor, Music Instrumental Department, PGGCG, Sector-11, Chandigarh

शोध सार

जन संचार अपने आप में बहुत बड़े उद्योग के रूप में विकसित हुआ है। फिल्म उद्योग के रूप में विकसित हुआ है। फिल्म उद्योग तथा दूरदर्शन दोनों आपस में जुड़े हैं, संगीत का इन क्षेत्रों के विकास में बहुत बड़ा योगदान है। आज कई जानी मानी फिल्म उद्योग तथा कला क्षेत्रों की हस्तियाँ अपने ज्ञान व अनुभव को सांझा करने तथा अगली पीढ़ियों को उसमें प्रशिक्षित करने के लिए आगे आई हैं नए-नए शिक्षण संस्थान खोले जा रहे है तथा उनमें विधिवत संगीत को शिक्षा के आयाम बढ़े हैं। प्रतिभा की पहचान तथा उसके विद्रोहन में ये संस्थाएं सशक्त भूमिका निभा रही है। कोविड महामारी ने पूरी दुनिया में विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों को अस्त व्यस्त कर दिया है। शास्त्रीय संगीत भी इससे अछूता नहीं है। वायरस के बढ़ते मामलों के भय से शहरों में स्कूल कालेज और संस्थान इत्यादि सब बंद है। ऐसे में बढ़ते डिजिटल पाठ्यक्रम एक उभरते हुए समाधान के रूप में सामने आये है। आजकल विघालयों व महाविघालयों में Zoom, Google Meet, Cisco Webex, Whatsapp आदि कई प्रकार के apps के माध्यम से online कक्षाओं में अध्यापन कार्य हो रहा है।

मुख्य शब्द- डिजिटल पाठ्यक्रम, भारतीय संगीत, apps

भूमिका

संगीत मानव जाति के लिए कुदरत का एक अनुप उपहार है। समस्त संसार संगीत से न केवल ओत-प्रोत है अपितु सृष्टि का स्फुरण भी संगीत से ही अभिव्यक्त होता है। शास्त्रीय संगीत को भारतीय संस्कृति की आत्मा कहा जाता है। भारतीयों का शास्त्रीय संगीत के प्रति लगाव किसी से भी छुपा नहीं है। यह भारत की विभिन्न संस्कृतियों तथा विभिन्नताओं को एक माला में पिरोने का काम करता है। कई वर्षों की कड़ी मेहनत और कठिन परिश्रम के पश्चात ही कोई कुशत और तेजस्वी शास्त्रीय संगीतज्ञ निखर के आता हैं पक्षी के उड़ान का उनके कलरव से भान होता है, नदी की कल-कल से उसके बहाव का, झरने के झर-झर से पानी की बहुलता एवं उसके उत्थान का आभास होता है। वाणी तथा अन्य साधनांए जो इतनी स्वाभाविक व प्राकृतिक है, उसे औपचारिक शिक्षा में कैसे बाँधा जाए। जब अन्य क्षेत्रों में शिक्षा अजीविका, जीवन-यापन और पेशे से जुड़ी है तो संगीत के क्षेत्रों में संगीत केवल संगीत के लिए ही क्यों?

नवीन बदलाव

बीसवीं शताब्दी का आरंभ केवल भारत के स्वातंत्राय युग का ही क्रान्ति काल नहीं है, अपितु संगीत शिक्षण को सृष्टि से भी एक अनोखी क्रान्ति का युग माना है। इससे पहले अनौपचारिक तौर पर ही गुरू-शिष्य परम्परा द्वार ही संगीत में शिक्षा के अवसर थे। परन्तु आज शिक्षण का क्षेत्र विस्तृत हो गया है, अधिक लोग संगीत को सुनते, समझते एवं सीखते हैं, जिसके फलस्वरूप संगीत की शिक्षा सबके लिए सुलभ हो गई है। किसी ने ठीक ही कहा है कि यदि किसी देश के शासन, देशवासियों के रहन सहन एवं संस्कृति का स्तर देखना चाहो तो उस देश के संगीत के स्तर को देख लो। आज किसी विद्यार्थी को संगीत सीखने हेतु गुरू के घर रह कर उनकी सेवा करना अनिवार्य नहीं, उसे अलग-अलग घराने की विद्या एक ही मंच से सुनने को मिल जाती है। साथ ही तेज़ी से बढ़ते वैश्वीकरण ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को नए आयाम भी दिए हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत मानवीय चेतना को नए आयाम पर से जाता है। शोध से पता चला है कि

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

शास्त्रीय संगीत से मन को एकाग्रता मिलती हैं यह हमारी स्मरण शक्ति को बढ़ाता है। निश्चित ही इससे हमारे आत्मविश्वास का स्तर ऊपर उठता हैं विश्व भर में शास्त्रीय संगीत के तरफदार हर कहीं मिल जायेंगे। टीवी लाइव स्टेज शो अथवा किसी त्यौहार अथवा अन्य सांस्कृतिक मौके पर कार्यक्रम प्रस्तुत करने पर अच्छी आय मिलती है। साथ ही बढ़ते इंटरनेट के प्रसार ने संगीत के माध्यम से आय पाने की नयी संभावनाएं उत्पन्न कर दी है।

शिक्षा पद्वति में बदलाव

विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्व-विद्यालय द्वारा शिक्षा का प्रावधान होने से एक तो संगीत शिक्षण में एकरूपता आई है और परिणाम के अवसर बढ़े हैं। देश में संगीत को आज भी एक शौक अथवा जूनून के रूप में अपनाया जाता है न कि एक व्यवसाय अथवा पेशे के रूप में। जिसका प्रमुख कारण है जागरूकता का अभाव। चूंकि भारतीय संगीत अपनी एक समृद्ध विरासत रखता है। संगीत के क्षेत्र में शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार से कलाकारों को अपने जुनून को कायम रखने के साथ ही साथ उनके अजीविका के साधन भी बढ़े हैं। अंतःविषय प्रवेश का प्रयोग बढ़ रहा है वैसा ही संगीत के क्षेत्र में भी वांछनीय है सीमित की शिक्षा केवल मानवीय संकाय तक ही सीमित न रख कर विज्ञान, वाणिज्य तथा प्रबन्ध पतकाया में भी प्रसारित होनी चाहिए। जिस प्रकार-स्वास्थ देखभाल, क्रय-विक्रय, कोश एवं खेल कूद में विशेष प्रकार की डण्ठण्। का प्रावधान है, उसी प्रकार संगीत में भी प्रबन्ध की डिग्री होनी चाहिए। संगीत से जुड़ी संस्थाओं, प्रोग्राम आदि में उनके लिए रोजगार के अवसर खुलेंगें। इसी प्रकार संगीत के विभिन्न क्षेत्रों में क्रियात्मक प्रदर्शनकी औपचारिक शिक्षा का विधान होना चाहिए जिससे कलाकार अपनी प्रस्तुति को और अधिक निखार कर धन अर्जित करने की क्षमता को बढा सकेगा। रिर्काडस, टेपरिकोडर्स, रेडियों, टी.वी सीडीज, कमपेक्ट डिस्क तथा प्रैस के द्वारा संगीत का षिक्षण- पिछले कई वर्शो से प्रसारण केन्द्रों द्वारा संगीत के कार्यक्रमों को लगातार सुनवाया जाता है। रेडियों के भवनों में भी संगीत षिक्षक रागों का परिचय आरोह अवरोह, पकड़, स्थाई, अन्तरा, आलाप ताने, तोडे, आदि का प्रषिक्षण दिया जाता है। संगीत के महान गुरूओं द्वारा रेडियों में कार्यक्रम दिये जाते है। इनसे कई गायन वादन षैलियों का उचित ज्ञान प्राप्त होता है। संगीत षिक्षण के लिए आधुनिक युग में रेडियों की रिकोर्डिग का भी प्रयोग करते है। टी.वी., वीडियों कैसट, वीडियों सी0 डी0 द्वारा संगीत का षिक्षण प्रदान किया जाता है। टी0 वी0 पर संगीत के कार्यक्रमों में अच्छे-अच्छे कलाकारों के वीडियों कैसट, वीडियों सी0 डी0 सुनवाये व दिखाये जाते है। ऐसे कार्यक्रम संगीत षिक्षण के लिए आधुनिक युग में लाभदायक है। फिर भी पर्याप्त अवसरों और मार्गदर्शन के अभाव में छात्र इसे पेशे के रूप में बहुत कम चुनते हैं कि हम कार्यशालाओं और परमर्श केन्द्रों के माध्यम से अभिभावकों को संगीत के प्रति जागरूक कर रहे हैं भारत में शास्त्रीय संगीत को आगे बढ़ाने में भारतीय शास्त्रीय संगीत संस्थानों का सबसे प्रमुख योगदान रहा है। की अपार संभावनाएं हैं बेहतर होगा यदि कोई 5 से 8 वर्ष के बीच ही शास्त्रीय संगीत की दीक्षा लेना शुरू कर दे। क्यों की इस उम्र में आवाज़ की सीमा बढ़ाने सुनने की कला और विभिन्न माडयूलेशन तकनीकों की पहचान करना आसान हो जाता है।

नई शिक्षा नीति

आने वाले समय में नई शिक्षा नीती के अनुसार हम संगीत विशय को विज्ञान,वाणिज्य व अन्य व्यवसायिक विशयों तथा अन्य पाठयक्रमों के साथ एच्छिक विषय के रुप में भी पढ सकेगें। जिसने छात्रों और संस्थानों के लिए नयी और व्यापक संभावनाएं उत्पन्न कर दी हैं। आने वाले समय में संगीत की शिक्षा पठन-पाठन, समीक्षा, अनुसंधान की रूपरेखा बदलने वाली है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

इलेक्ट्रोनिक मीडिया का सहयोग

जन संचार अपने आप में बहुत बड़े उद्योग के रूप में विकसित हुआ है। फिल्म उद्योग के रूप में विकसित हुआ है। फिल्म उद्योग तथा दूरदर्शन दोनों आपस में जुड़े हैं, संगीत का इन क्षेत्रों के विकास में बहुत बड़ा योगदान है। आज कई जानी मानी फिल्म उद्योग तथा कला क्षेत्रों की हस्तियाँ अपने ज्ञान व अनुभव को सांझा करने तथा अगली पीढ़ियों को उसमें प्रशिक्षित करने के लिए आगे आई हैं नए-नए शिक्षण संस्थान खोले जा रहे है तथा उनमें विधिवत संगीत को शिक्षा के आयाम बढ़े हैं। प्रतिभा की पहचान तथा उसके विद्रोहन में ये संस्थाएं सशक्त भूमिका निभा रही है। उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी ने अपने 57 वर्षों की विरासत में पहली बार 225 से अधिक छात्रों को वीडियो कालिंग और रिकार्ड किए गए व्याख्यान के माध्यम से कथक और अन्य शास्त्रीय संगीत का आनलाइन प्रशिक्षण दिया। इसी तर्ज पर देश के अन्य संस्थानों ने भी छात्रों को शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण देना आरम्भ कर दिया है। जिसने छात्रों और संस्थानों के लिए नयी और व्यापक संभावनाएं उत्पन्न कर दी हैं। हर साल 21 जून का दिन विश्व संगीत दिवस के रूप में संगीत की शक्ति का स्मरण कराने वाला खास दिन होता है। संगीत विशेषज्ञों की मानें तो असल संगीत वही है जिसे रूह गाए और रूह सुने जो कर्णप्रिय हो। असल संगीत वही है जिसे सुनने पर आत्मा का सीधे ईश्वर से संपर्क हो। सुर ताल और लय संगीत के मूल आधार हैं। पहले के संगीत को देखेंगे उनमें इन तीनों का मिला जुला रूप होता था पर आज के समय में लय प्रधान हो गया है। लय पर लोग नाच तो लेते हैं। भले ही सुर और शब्द न समझ पाएं। ऐसा नहीं है कि यह बदलाव अचानक से आ गया है। यह काल दर काल चलती आ रही प्रक्रिया है असल संगीत तो आत्मा का ईश्वर से मिलन कराने वाली है। जो मौजूदा दौर में गाया सुना जा रहा हैं जिसे लोग विशेषकर युवा खूब पसंद कर रहे हैं। यह संगीत तो हो ही नहीं सकता हैं आज के समय में तानसेन और कानसेन दोनों की कमी है।

संगीत का प्रचार एवम प्रसार

निस्संदेह कलाकार अपनी कला से परिपक्व होता है, कला की अभिव्यक्ति तथा उसके सवर्धन में, माध्यमों तथा मंच का विशेष योगदान होता है। संगीत के क्षेत्र में तथा शिक्षा में इन माध्यमों तथा मंचों का बड़ी तेजी से विकास हो रहा है। आज ये संस्थाएँ, गोष्ठियां कार्यशालाएँ, सेमीनार आदि को आयोजित कर संगीत शिक्षण के प्रचार-प्रसार में रचनात्मक भूमिका शिक्षण के प्रचार-प्रसार में रचनात्मक भूमिका निभा रही हैं। अनुसंधान की भी इस क्षेत्र में काफी गुंजाइश है। समय के साथ इसे बदला जाता है तो अच्छा है, नहीं तो वक्त के आगे सबको झुकना पड़ता है।

यह तो नितांत सत्य है कि आज का संगीत विद्यार्थी अधिक चतुर और बुद्धिमान है। वह शिक्षित होने के कारण प्रत्येक बात को वैज्ञानिक कसौटी पर कस कर ही ग्रहण करता है। आज के समय में वह संगत शिक्षक, पाश्र्व गायन, वादक, मंच कलाकार, गीतकार, लेखक, प्रकाशक, वाद्य निर्माता आदि के रूप में हमारे समाज में अर्थोपार्जन नहीं कर रहा है, अपितु चिकित्सा के व्यवसाय में भी संभावनाएं विकासोन्मुख है। ऐसा भी नहीं है कि लोग अच्छा गा और सुन नहीं रहे है। यह मानव की प्रकृति रही है। उसे गलत चीजें ज्यादा आकर्षित करती हैं और तेजी से समझ आती हैं जब मौजूदा संगीत में अश्लील और अशोभनीय शब्दों का प्रयोग शुरू हुआ तो लोगों को यह पसंद आया वही इंसानी फितरत। पर उस समय शायद हम यह ध्यान नहीं दे पाए कि हम संगीत के असल स्वाद से कोसों दूर होते जा रहे हैं। भोजपुरी से लेकर बा ॅलीवुड गानों में अश्लीलता को घोला जा रहा हैं लोगों को न जाने क्यों यह कडवा विष मीठा लग रहा है। शायद पाष्चात्य सभ्यताओं को हम ज्यादा प्राथमिकता देने लगे हैं। इसलिए भी। असल में इसे संगीत और इनके गाने वालों को गायक कहना भी उचित नहीं है। यह तो व्यापार है, गाने बनाने, लोगों को कुछ भी उल्टा सीधा सुनाने और पैसे कमाने से

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 03, December 2021
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

मतलब है। सौभाग्य से बच्चे अच्छा और वास्तविक संगीत सीख रहे हैं ऐसे में आशा है भविष्य की पसंद भी वही संगीत होगी जिसकी पूर्वजों ने कल्पना की थी। ये जो दौर है। गानों में अभद्र शब्दों के प्रयोग का जल्द बीतेगा। नई सुबह होगी ज्यादा रोशन ज्यादा चमकदार। जहां वास्तविक संगीत ही गाया और सुना जाएगा। विश्व संगीत दिवस पर हमें यही शपथ लेना है कि अच्छा सुनेंगे। क्योंकि आप अच्छा सुनेंगे तभी अच्छा सोचेंगे और जब अच्छा सोचेंगे तो ही अच्छा करेंगें।

संगीत दिमाग और आत्मा के बीच संतुलन बनाने में सहायता करता हैं एक बार संतुलित होने के बाद आप अपनी गलतियों से खुद सीख सकते हैं। किसी भी कला के लिए रियाज सबसे अहम है। प्रकृति किसी भी कलाकार की सबसे अच्छी शिक्षक है। इसलिए प्रकृति की लय ताल का गहराई से अध्ययन करना चाहिए। आज संगीत बदलाव के दौर से गुजर रहा हैं ऐसा मानना है कि संगीत में बदलाव के पीछे बाजार की मांग जिम्मेदार है। बाजार की मांग के अनुरूप संगीत परोसा जाता है। मौजूदा समय में फास्टफूड की संस्कृति का चलन बढ़ा है और यह बात संगीत पर भी लागू होती है। के और लंबे समय तक याद भी रहे। हमारे ऊपर कम समय में अपने संगीत को हिट कराने का दबाव होता है। संगीत में तब से लेकर अब तक काफी बदलाव आया है और मैं मानती हूं कि यह बदलाव जरूरी भी है। वक्त के साथ संगीत की शैली में भी बदलाव आने स्वभाविक हैं।

निष्कर्ष

संगीत जितना अध्यात्मिकता से जुड़ा हुआ है उतना ही आज उस संसार से, जिसे हम भौतिक संसार कहते हैं। भूमण्डलीयकरण तथा वैश्वीकरण ने संगीत को शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार को परिवर्तित कर दिया है। आज संगीत समय तथा स्थान की सीमाएं लाँघ कर अनन्त फैले क्षितिज को छूने को बेकरार है। आनलाइन एप्लीकेशन्स तथा आधुनिक मंचों ने नए माध्यम तथा नई विद्याएँ ईजाद की हैं। सूचना क्रांति ने संगीत के क्षेत्र में आमूल-चूल परिवर्तन कर डाले हैं। अनतः हम कह सकते है कि पिछले कुछ वर्षो में विभिन्न संस्थाओं, सजग व्यक्तियों, पत्र-पत्रिकाओं, जनसंचार तथा इंटरनेट द्वार शिक्षण परम्परा को सचेत करने के प्रयत्न हो रहे हैं और यह अत्यन्त स्वागत योग्य है।

सन्दर्भ ग्रंथ

संगीत मासिक पत्रिका, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ. प्र. जनवरी- फरवरी 1969, 1976, 1978, 2004
संगीत कला विहार, संगीत कार्यालय, हाथरस, 2006,
http://www.india.gov.in/topics/art-culture/music
http://www.academis.edu/Documents/in/indian_muissc